भविष्य की राह:

- लघु अवधि (2029–30 तक) : जेवर एयरपोर्ट को आधुनिक कार्गो–ट्रांजिट हब बनाना, सभी जिलों को एक्सप्रेसवे से जोड़ना, स्मार्ट ग्रिड और नवीकरणीय ऊर्जा का विस्तार तथा नेपाल सीमा पर ट्रांजिट हब और पर्यटन स्थलों पर रोपवे विकसित करना।
- मध्यम एवं दीर्घ अवधि (2030–47): "एक मंडल–एक एयरपोर्ट" के तहत हर मंडल में विश्वस्तरीय हवाई अड्डे का विकास, जिससे उत्तर प्रदेश वैश्विक विमानन और अवसंरचना का केंद्र बने।

संतुलित विकास (जलवायु सहिष्णु भविष्य)

- 2017 से पहले प्रदेश में ऊर्जा उत्पादन का अधिकांश हिस्सा थर्मल पर आधारित था और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में ठोस कार्ययोजना का अभाव था। 2017 के बाद अक्षय ऊर्जा को बढ़ावा देने, वृक्षारोपण, सौर ऊर्जा और हरित परिवहन की दिशा में बड़े कदम उठाए गए। वृक्षारोपण जनांदोलन बना।

भविष्य की राह:

- लघु अवधि (2029–30 तक): वृक्षाच्छादन को 10% से बढ़ाकर 15% करना, थर्मल ऊर्जा निर्भरता घटाकर 50% नवीकरणीय ऊर्जा सुनिश्चित करना, अयोध्या सहित सभी बड़े नगरों को सोलर सिटी के रूप में विकसित करना। सभी पर्यावरणीय SDG लक्ष्यों की प्राप्ति।
- मध्यम एवं दीर्घ अवधि (2030–47): जलवायु–सहिष्णु उत्तर प्रदेश का निर्माण, वृक्षाच्छादन 20% और वन क्षेत्र का राष्ट्रीय योगदान 3% तक ले जाना, सभी प्रमुख शहरों को सोलर सिटी में बदलना, शून्य कार्बन उत्सर्जन और ग्रीन हाइड्रोजन व अक्षय ऊर्जा में वैश्विक नेतृत्व हासिल करना।

सामाजिक सुरक्षा एवं गरीब कल्याण

- 1947–2017 तक योजनाओं का लाभ सीमित और अपारदर्शी रहा। 2017 के बाद लक्षित व पारदर्शी मॉडल से 6 करोड़ लोग गरीबी रेखा से ऊपर आए। जीरो पावर्टी अभियान, पेंशन, सामूहिक विवाह, उज्ज्वला, अन्नपूर्णा भवन और राशन कार्ड जैसी योजनाओं से कमजोर वर्ग को गरिमा व सुरक्षा मिली।

भविष्य की राह:

- लघु अवधि (2029–30 तक) : वंचित वर्गों को शिक्षा–स्वास्थ्य–आवास–आजीविका में समान अवसर, महिलाओं की श्रम भागीदारी 50% तक, बहुआयामी गरीबी का उन्मूलन और हर नागरिक को सामाजिक सुरक्षा।
- मध्यम एवं दीर्घ अवधि (2030–47) : पूर्वांचल–बुंदेलखंड का संतुलित विकास, युवाओं को नवाचार–खेल–संस्कृति में वैश्विक अवसर, यूपी को स्किल्ड मानव संसाधन का प्रमुख आपूर्तिकर्ता बनाना।

स्वास्थ्य एवं चिकित्सा

- 1947–2017 तक स्वास्थ्य सेवाएँ कमजोर रहीं। 2017 के बाद मेडिकल कॉलेज, AIIMS, यूनिवर्सिटी, नर्सिंग कॉलेज विस्तार, आयुष्मान कार्ड, मातृ–शिशु मृत्यु दर में कमी और JE नियंत्रण जैसे बड़े सुधार हुए।

भविष्य की राह:

- लघु अवधि (2029–30 तक) : कम से कम 50% आबादी को निःशुल्क स्वास्थ्य बीमा, SDG स्तर की मातृ–शिशु मृत्यु दर, कुपोषण नियंत्रण, नए AIIMS व मेडिकल–फार्मा पार्क।
- मध्यम एवं दीर्घ अवधि (2030–47): सभी नागरिकों को बीमा, फार्मा–बायोटेक अनुसंधान में नेतृत्व, मेडिकल टूरिज़्म व इनोवेशन से यूपी को वैश्विक स्वास्थ्य केंद्र बनाना।

शिक्षा एवं कौशल विकास

- 1947–2017 तक शिक्षा अवसंरचना कमजोर रही, ड्रॉपआउट दर अधिक और तकनीकी–कौशलपरक शिक्षा का अभाव था। बेरोजगारी, भर्तियों में भेदभाव और महिलाओं की सीमित भागीदारी बड़ी चुनौतियाँ थीं।
- 2017 के बाद व्यापक सुधार हुए। स्कूल चलो अभियान और ऑपरेशन कायाकल्प से विद्यालयों में बुनियादी सुविधाएँ पहुँचीं। अटल आवासीय विद्यालय, मुख्यमंत्री अभ्युदय कंपोजिट विद्यालय और प्रोजेक्ट अलंकार जैसे अभिनव प्रयास हुए। 10 नए राज्य विश्वविद्यालय, आधुनिक आईटीआई और लगभग 50 लाख टैबलेट–स्मार्टफोन से युवाओं का डिजिटल सशक्तिकरण हुआ। पारदर्शी भर्तियों से लाखों युवाओं को रोजगार और महिला श्रम भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

भविष्य की राह:

- लघु अवधि (2029–30 तक) : थीम आधारित विश्वविद्यालयों की श्रृंखला, ग्लोबल स्किल यूनिवर्सिटी और IIT–IIM समकक्ष संस्थानों की स्थापना, साथ ही अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों के कैम्पस व एक्सचेंज प्रोग्राम से युवाओं को वैश्विक अवसर देना।
- मध्यम एवं दीर्घ अवधि (2030–47): उत्तर प्रदेश को शिक्षा व कौशल विकास का वैश्विक केंद्र बनाना, जहाँ विश्वस्तरीय अनुसंधान और नवाचार केंद्र स्थापित हों और प्रदेश की उच्च शिक्षा संस्थाओं को अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हो।

सुरक्षा एवं सुशासन

- प्रदेश सरकार ने बीते साढ़े 8 वर्षों में जीरो टॉलरेंस की नीति अपनाकर कानून–व्यवस्था को सुदृढ़ किया है। बेटियों से लेकर किसानों व व्यापारियों तक हर नागरिक के लिए सुरक्षित माहौल सुनिश्चित किया गया। पुलिस बल को सशक्त बनाते हुए महिला सुरक्षा, अपराध नियंत्रण, संपत्ति जब्ती और ऑपरेशन कन्विक्शन जैसे कदमों से अपराधों में उल्लेखनीय कमी आई। पुलिस आधुनिकीकरण, सेफ सिटी प्रोजेक्ट, सीसीटीवी नेटवर्क और कमिश्नरेट प्रणाली से प्रशासन अधिक प्रभावी व जवाबदेह हुआ।

भविष्य की राह:

- लघु अवधि (2029–30 तक) : स्मार्ट पुलिसिंग, एआई–आधारित निगरानी और ई–गवर्नेंस प्लेटफॉर्म से भयमुक्त समाज और पारदर्शी शासन।
- मध्यम एवं दीर्घ अवधि (2030–47): उत्तर प्रदेश को सुरक्षित, निवेश–अनुकूल और संतुलित विकास वाला प्रदेश बनाना, जहाँ हर जिले की विशिष्ट पहचान और आधुनिक डिजिटल–ऊर्जा अवसंरचना हो।

विजन डॉक्यूमेंट 2047

जनभागीदारी से निर्माण

विकसित भारत–विकसित उत्तर प्रदेश" का सपना केवल सरकार का नहीं, बल्कि पूरे उत्तर प्रदेश का साझा लक्ष्य है। सरकार की कोई भी योजना तभी सफल होती है, जब जनता उसे विश्वास और सक्रिय सहभागिता के साथ आगे बढ़ाती है। विकसित उत्तर प्रदेश की परिकल्पना भी हर प्रदेशवासी के सहयोग से ही साकार होगी।

- 500 से अधिक विषय–विशेषज्ञों (सेवानिवृत्त IAS/IPS, वैज्ञानिक, कुलपति/ प्रोफेसर, चिकित्सक, सेक्टोरल स्पेशलिस्ट) का पैनल जिलों में संवाद के लिए जा रहा है। जनपद/ब्लॉक/ग्राम/पंचायत/स्कूल/कॉलेज/विश्वविद्यालय/ तकनीकी संस्थान तक होगी पहुँच।
- 01 माह का सुझाव–संकलन अभियान।
- जनप्रतिनिधि, व्यापारिक संगठन, बुद्धिजीवी, आम जनता से परामर्श।
- प्रत्येक परिवार से सुझाव देने का आग्रह। हर परिवार सीधे सरकार तक अपने सुझाव दे सकता है, चयनित सुझावों को जनपद/प्रदेश स्तर पर पुरस्कृत किया जाएगा।
- QR Code व विशेष पोर्टल से ऑनलाइन सुझाव देना आसान।

यह फोल्डर केवल जानकारी नहीं, बल्कि आमंत्रण है –

अपने विचार और संकल्प साझा करने के लिए अभी QR कोड स्कैन करें या विज़िट करें :

https://samarthuttarpradesh.up.gov.in

विजन 2047 हमारे लिए एक संकल्प है। एक ऐसा संकल्प कि हम उत्तर प्रदेश को न केवल भारत का सबसे सशक्त और समृद्ध राज्य बनाएँगे, बल्कि दुनिया के सामने विकास, संस्कृति और मानवीय मूल्यों का आदर्श भी पेश करेंगे। हम वो प्रदेश बनाएंगे जो न केवल भारत में, बल्कि पूरी दुनिया में अपने विकास, अपनी तकनीकी ताक़त, अपने उद्योग और अपनी अद्वितीय संस्कृति के लिए जाना जाएगा। जहाँ विकास की गंगा और परंपरा की यमुना साथ–साथ बहेंगी। आइए, हाथ से हाथ, मन से मन और कदम से कदम मिलाकर हम सब इस महान यात्रा का शुभारंभ करें।

नियोजन विभाग, उत्तर प्रदेश

मुद्रक : गॉस्पेल प्रेस, लखनऊ

विकसित भारत-विकसित उत्तर प्रदेश
आत्मनिर्भर भारत- आत्मनिर्भर उत्तर प्रदेश

शताब्दी संकल्प @2047

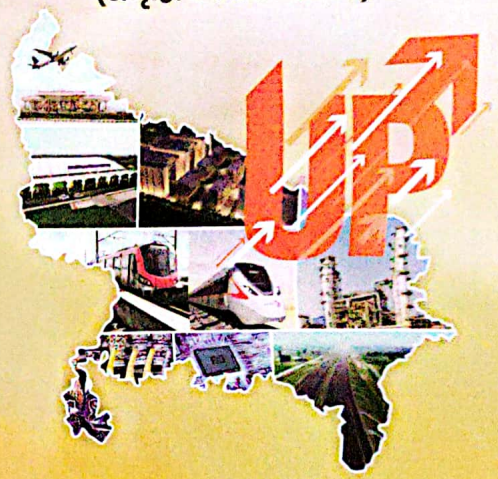

(समृद्धि का शताब्दी पर्व)

समर्थ ❖ समृद्ध ❖ सशक्त

उत्तर प्रदेश

सशक्त-समृद्ध-आत्मनिर्भर उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश केवल भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक आत्मा का केंद्र ही नहीं, बल्कि राष्ट्र की राजनीतिक चेतना और आर्थिक आकांक्षाओं का सशक्त वाहक भी है। भारत के अमृतकाल में आदरणीय प्रधानमंत्री जी ने 'विकसित भारत@2047' की परिकल्पना प्रस्तुत की है। यह परिकल्पना केवल एक लक्ष्य नहीं, बल्कि संपूर्ण राष्ट्र की सामूहिक यात्रा है। देश के सबसे अधिक जनसंख्या वाले राज्य के रूप में उत्तर प्रदेश इस महान संकल्प को साकार करने में अग्रणी भूमिका निभाने को तत्पर है।

ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट 2023 में प्रधानमंत्री जी ने कहा था कि "भारत अगर आज दुनिया के लिए ब्राइट स्पॉट है, तो उत्तर प्रदेश भारत की ग्रोथ को ड्राइव करने वाला एक अहम नेतृत्व दे रहा है।" वास्तव में, प्रधानमंत्री जी के मार्गदर्शन में वर्ष 2017 से 2025 के बीच उत्तर प्रदेश ने सुरक्षा, सुशासन और विकास की ठोस नींव रखी है। अब इसी आधार पर हमारा सकल्प है कि वर्ष 2047 तक उत्तर प्रदेश को भारत का सबसे अग्रणी और विकसित राज्य बनाया जाए। इस हेतु विशेषज्ञों के परामर्श और व्यापक जन सहभागिता के साथ विकसित उत्तर प्रदेश@2047 की कार्ययोजना तैयार की जा रही है।

मिशन

1. समग्र विकास – हर नागरिक को घर, पानी, बिजली, शिक्षा और स्वास्थ्य।
2. आर्थिक नेतृत्व – उद्योग, कृषि और सेवा क्षेत्र में प्रतिस्पर्धी बढ़त
3. सांस्कृतिक पुनर्जागरण – परम्परा और आधुनिकता का संतुलित संगम।

तीन प्रमुख थीम

- अर्थ शक्ति
- सृजन शक्ति
- जीवन शक्ति

चिन्हित 12 सेक्टर

- कृषि एवं संबद्ध सेक्टर : कृषि विभाग, कृषि शिक्षा, उद्यान विभाग, चीनी उद्योग एवं गन्ना विकास विभाग, सिंचाई एवं जल संसाधन विभाग, सहकारिता।
- पशुधन संरक्षण सेक्टर : पशुपालन एवं डेयरी विकास विभाग, मत्स्य विभाग।
- औद्योगिक विकास सेक्टर : औद्योगिक विकास विभाग, MSME विभाग, खनन विभाग।
- आईटी एवं इलेक्ट्रॉनिक्स सेक्टर : आईटी एवं इलेक्ट्रानिक्स विभाग, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग।
- पर्यटन सेक्टर : पर्यटन विभाग, धर्मार्थ कार्य विभाग, संस्कृति विभाग।
- नगर एवं ग्राम्य विकास सेक्टर : नगर विकास, आवास एवं शहरी नियोजन, ग्राम्य विकास व पंचायती राज तथा नमामि गंगे।
- अवस्थापना सेक्टर : परिवहन, नागरिक उड्डयन, लोक निर्माण तथा ऊर्जा विभाग।
- संतुलित विकास सेक्टर : पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन, अतिरिक्त ऊर्जा स्रोत विभाग।
- समाज कल्याण सेक्टर : समाज कल्याण विभाग, खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग, श्रम विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग, अल्पसंख्यक कल्याण, पिछड़ा वर्ग कल्याण एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण।
- स्वास्थ्य सेक्टर : स्वास्थ्य, चिकित्सा शिक्षा एवं प्रशिक्षण विभाग, आयुष।
- शिक्षा सेक्टर : बेसिक, माध्यमिक, उच्च, प्राविधिक तथा व्यावसायिक शिक्षा एवं कौशल विकास विभाग।
- सुरक्षा एवं सुशासन सेक्टर : गृह विभाग, होमगार्ड विभाग, भाषा विभाग, सामान्य प्रशासन विभाग।

आर्थिक समृद्धि

- पिछले 08 वर्षों में GSDP 2.2 गुना से अधिक बढ़कर लगभग ₹30 लाख करोड़।
- राष्ट्रीय GDP में योगदान 8% से बढ़कर 9.5%।
- विगत 04 वर्षों में प्रदेश की आर्थिक विकास दर 15.9%।
- प्रति व्यक्ति आय ₹52,671 (2016-17) से बढ़कर ₹1,08,572 (2024-25)
- निर्यात:- 2016-17 में ₹84 हजार करोड़ से बढ़कर 2024-25 में ₹1,86,060 करोड़।
- केंद्रीय कर निर्भरता घटकर 46.4%, राज्य कर हिस्सेदारी 53.6%।
- स्टेट एक्साइज:- 2016-17 में ₹12,000 करोड़ से बढ़कर 2024-25 में ₹52,574 करोड़।
- लगातार पाँच वर्षों से रेवेन्यू सरप्लस।
- स्वयं के कर संग्रह में देश में दूसरा स्थान, ब्याज व्यय अनुपात सबसे कम।

भविष्य की राह:

- पिछले 8 वर्षों की अभूतपूर्व उपलब्धियों को आगे बढ़ाते हुए, वर्ष 2029-30 तक उत्तर प्रदेश को 1 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने की दिशा में कार्य।
- अगले 5 वर्षों में विकास दर 20% से अधिक बढ़ाकर प्रदेश को वन ट्रिलियन डॉलर की इकॉनमी बनाना।
- भारत के शताब्दी वर्ष 2047 में, जब देश की अर्थव्यवस्था 30 ट्रिलियन डॉलर होगी, उत्तर प्रदेश 6 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था वाला राज्य बनकर देश के विकास का सबसे बड़ा आधार बनेगा।
- आजादी के अमृतकाल तक औसत विकास दर 15% सुनिश्चित करते हुए देश की GDP में प्रदेश का योगदान 20% तक पहुँचाना।
- वर्ष 2047 में उत्तर प्रदेश की प्रति व्यक्ति आय 20,000 अमेरिकी डॉलर (लगभग 26 लाख रुपए प्रति वर्ष), जो राष्ट्रीय औसत से अधिक होगी।

कृषि विकास

- 2017 से पहले प्रदेश में कृषि विकास सीमित रहा। सिंचाई, तकनीक, निवेश और मार्केट लिंक की कमी से उत्पादकता धीमी रही। पर 2017 के बाद इस क्षेत्र में नियोजित प्रयासों से अभूतपूर्व सुधार हुआ।
- बीते साढ़े 08 वर्षों में कृषि विकास दर 14% से अधिक, खाद्यान्न उत्पादन में राष्ट्रीय योगदान 20.5% और उत्पादकता में 42.8% वृद्धि हुई। गन्ना किसानों के बकाये का भुगतान हुआ, नई चीनी मिलें खुलीं। खाद्यान्न की पारदर्शी खरीद व्यवस्था सुनिश्चित हुई, DBT से भुगतान हो रहा और पीएम किसान निधि, फसल बीमा योजना जैसी योजनाओं ने किसानों को लाभान्वित किया।

भविष्य की राह:

- लघु अवधि (2029-30 तक) : प्रदेश को केवल उत्पादन में ही नहीं बल्कि उत्पादकता व निर्यात में भी अग्रणी बनाना है। उन्नतशील बीज, सीड पार्क, वैज्ञानिक खेती, फसल विविधीकरण और फूड प्रोसेसिंग अवसंरचना से किसानों की आय दोगुनी करना।
- मध्यम एवं दीर्घ अवधि (2030-47): अनाज, फल, सब्जियों की उत्पादकता को विश्वस्तरीय स्तर तक ले जाना, आधुनिक कृषि अनुसंधान व नवाचार केंद्र स्थापित करना और निर्यात व ब्रांडिंग के ज़रिए कृषि से पाँच गुना अधिक मूल्य अर्जित करना।

पशुधन

- वर्ष 2017 तक अपार संभावनाओं के बाद भी पशुधन और दुग्ध विकास सेक्टर उपेक्षित रहा। पहले दुग्ध, अंडा और मत्स्य क्षेत्र में योगदान सीमित था, पर 2017 के बाद नस्ल सुधार, कृत्रिम गर्भाधान, चारा व चिकित्सा प्रबंधन और गोवंश संवर्धन- संरक्षण से बड़ा बदलाव आया।
- आज प्रदेश दुग्ध उत्पादन में 414 लाख मी.टन (राष्ट्रीय योगदान 16.2%, देश में प्रथम), अंडा उत्पादन में दोगुनी वृद्धि, मत्स्य उत्पादन में क्रांतिकारी बदलाव का साक्षी बना रहा है। यह सेक्टर रोजगार-सेवायोजन के नए अवसरों का सहज माध्यम बन कर उभरा है।

भविष्य की राह:

- लघु अवधि (2029-30 तक) : प्रदेश में दुधारू पशुओं की उत्पादकता दोगुनी, अंडा उत्पादन एवं मत्स्य उत्पादन में देश का शीर्ष राज्य बनना। गोवंश नस्ल सुधार, सेक्स्ड सॉर्टेड AI, प्रोटीनयुक्त आहार और निर्यातोन्मुख मछली प्रजातियों का विस्तार करना।
- मध्यम एवं दीर्घ अवधि (2030-47): उत्तर प्रदेश को दूध व अंडा उत्पादकता में विश्वस्तरीय स्तर पर पहुँचाना, मत्स्य व पशुपालन को निर्यातोन्मुख बनाना और पशुधन विज्ञान व प्रबंधन के अंतरराष्ट्रीय संस्थानों की स्थापना करना।

औद्योगिक विकास

- 1947-2017 तक प्रदेश का उद्योग ठहराव में रहा। न निवेश, न नीति, न इच्छाशक्ति। पारंपरिक उद्योग उपेक्षित और सार्वजनिक इकाइयाँ बंद होती गईं।
- 2017 के बाद उत्तर प्रदेश औद्योगिक शक्ति बनकर उभरा। आज 27,000+ कारखाने संचालित, 45 लाख करोड़ निवेश, 15 लाख करोड़ से अधिक धरातल पर, 60 लाख रोजगार, ODOP से 77 GI टैग और MSME नीति से पौने दो करोड़ रोजगार मिले। रिकॉर्ड FDI, सेक्टोरल नीतियाँ और निवेश सारथी प्लेटफॉर्म ने प्रदेश को वैश्विक निवेश का केंद्र बना दिया।

भविष्य की राह:

- लघु अवधि (2029-30 तक) : निर्यात चार गुना तक बढ़ाना, नये औद्योगिक नोड्स विकसित करना। MSME उत्पादों की बेहतर मार्केटिंग, पैकेजिंग तथा तकनीक से जोड़ने के लिए हर मंडल में कॉमन फैसिलिटी सेंटर स्थापित करना। रक्षा उत्पादन, एयरोस्पेस, लेदर, फुटवियर और वस्त्रों में नेतृत्व स्थापित करना।
- मध्यम एवं दीर्घ अवधि (2030-47) : EV बैटरी, सेमीकंडक्टर जैसे उच्च-मूल्य उद्योगों में अग्रणी बनकर भारत का प्रमुख निर्यात और निवेश केंद्र बनना।

आईटी एवं इलेक्ट्रॉनिक्स

- इन्फोर्मेशन टेक्नोलोजी और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसे अपेक्षाकृत नए युग के क्षेत्र में विगत साढ़े 08 वर्षों में प्रदेश ने अनेक प्रयास किये हैं। उत्तर भारत का पहला डेटा सेंटर आज गौतमबुद्ध नगर में स्थापित है तो अनेक नए डेटा सेंटरों की स्थापना प्रक्रियाधीन है। सॉफ्टवेयर निर्यात में भी प्रदेश ने कीर्तिमान बनाये हैं, 2017 से पूर्व इस दिशा में कोई ठोस नीतिगत प्रयास नहीं किये गये।

भविष्य की राह:

- लघु अवधि (2029-30 तक) : लखनऊ व कानपुर में AI सिटी, एनसीआर-लखनऊ-नोएडा को GCC हब, नये यूनिकॉर्न स्टार्टअप, हर मंडल में इन्क्यूबेटर का विकास करना। इसरो के सहयोग से मौसम पूर्वानुमान तथा आपदा प्रबन्धन हेतु सैटेलाइट लॉन्चिंग का प्रयास तथा सेमीकंडक्टर व ईवी बैटरी निर्माण में अग्रणी स्थान बनाना।
- मध्यम एवं दीर्घ अवधि (2030-47): उत्तर प्रदेश को AI, क्वांटम कम्प्यूटिंग, ब्लॉकचेन में वैश्विक लीडर, डेटा सेंटर हब और IT निर्यात शक्ति के रूप में स्थापित कर, युवाओं को विश्व स्तर पर रोजगार अवसर और प्रदेश को विश्वस्तरीय टेक्नोलॉजी कॉरिडोर प्रदान करना।

पर्यटन: विरासत से विकास व रोजगार तक

- 1947-2017 तक उपेक्षा के कारण उत्तर प्रदेश की राष्ट्रीय पर्यटन हिस्सेदारी घटकर 13.1% रह गई। 2017 के बाद तीव्र उछाल से यह 18.99% पहुँची। श्रीकाशी विश्वनाथ धाम, श्रीराम जन्मभूमि, दीपोत्सव, ब्रज विकास, पर्यटन परिपथ और हेलीपोर्ट सुविधाओं ने यूपी को धार्मिक-सांस्कृतिक पर्यटन का वैश्विक केंद्र बना दिया। महाकुंभ 2025 ने इसे विश्व मानचित्र पर स्थापित कर अर्थव्यवस्था व रोजगार को नया आयाम दिया।

भविष्य की राह:

- लघु अवधि (2029-30 तक) : नैमिषारण्य, विंध्याचल, मथुरा जैसे नए पर्यटन कॉरिडोर, रामायण-कृष्ण-बौद्ध सर्किट का विस्तार, इको-टूरिज्म और विदेशी पर्यटकों की संख्या बढ़ाने पर फोकस।
- मध्यम एवं दीर्घ अवधि (2030-47): उत्तर प्रदेश को विश्व की सांस्कृतिक राजधानी के रूप में स्थापित कर परंपराओं और समृद्ध वैभव को वैश्विक पहचान दिलाना।

नगर विकास

- 1947-2017 तक शहरीकरण अव्यवस्थित रहा। निकाय और बजट आबादी के अनुरूप नहीं थे, बुनियादी सुविधाएँ अधूरी और विकास असंतुलित था। 2017 के बाद योजनाबद्ध और तकनीक-सक्षम शहरीकरण शुरू हुआ। नए व विस्तारित निकाय, स्मार्ट सिटी मॉडल, राज्य राजधानी क्षेत्र और क्षेत्रीय विकास योजनाओं से जल-सीवर, हरित क्षेत्र और स्वच्छता में सुधार हुआ।

भविष्य की राह:

- लघु अवधि (2029-30 तक) : हर शहर को आधुनिक स्मार्ट सिटी बनाना, जहाँ स्वच्छ पेयजल, स्वच्छता, 24x7 बिजली और पक्का आवास उपलब्ध हों। मेट्रो, लाइट मेट्रो और इको-फ्रेंडली पब्लिक ट्रांसपोर्ट से शहरी कनेक्टिविटी सुदृढ़ करना। तीन नए रीजनल आर्थिक ज़ोन, पारदर्शी नगर वित्तीय प्रबंधन, आधुनिक सीवेज व अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली लागू करना।
- मध्यम एवं दीर्घ अवधि (2030-47): पाँच अंतरराष्ट्रीय स्तर के स्मार्ट शहर विकसित करना, जो कनेक्टिविटी, जीवन स्तर और निवेश के मामले में वैश्विक मानकों के अनुरूप हों। पूरे प्रदेश में 100% ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबंधन और वैज्ञानिक पुनर्चक्रण व्यवस्था सुनिश्चित करना।

अवस्थापना विकास

- 1947-2017 तक प्रदेश में आधारभूत ढाँचा लगभग ठहरा रहा। सीमित सड़क और हवाई कनेक्टिविटी, औद्योगिक विकास हेतु कोई ठोस नीति नहीं और ऊर्जा उत्पादन मात्र 12,000 मेगावॉट तक सीमित था।
- 2017 के बाद जल, थल और नभ तीनों मोर्चों पर अभूतपूर्व प्रगति हुई। 22 एक्सप्रेसवे, 16,000 किमी रेल लाइन, मल्टीमोडल लॉजिस्टिक्स हब, 16 संचालित व 5 निर्माणाधीन हवाई अड्डे तथा जेवर अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट जैसे प्रोजेक्ट्स ने उत्तर प्रदेश को इंफ्रास्ट्रक्चर पॉवरहाउस बना दिया। ऊर्जा उत्पादन 20,000 मेगावॉट से अधिक और विद्युतीकृत मजरों की संख्या दोगुनी हो गई।

CamScanner